स्नेह गोस्वामी

ईश्वर जिंदा है

ई-मेल-goswamisneh@gmail.com

एक हँसता खेलता शहर। जीवन से भरपूर शहर। सात बाजारों और हजारों खोमचे वालों से गुलजार शहर। तीन मॉल और सात थियेटरों के भीड़भाड़ से रचा बसा शहर। मंदिरों की आरती, शंख और घंटों की आवाजों, मस्जिदों की अजानों से गुंजायमान शहर। नौ लाख लोगों के सपनों का शहर। जहाँ दीवाली और ईद गलबहियाँ डाले टहलती हैं। जहाँ गुझियाँ और सिवैयाँ एक ही तश्तरी में सजती हैं। उस प्यार से पगे शहर में अचानक दंगे शुरु हो गये हैं । कल देर रात तक यह शहर एकदम शांत था । सभी फिरकों के लोग एक-दूसरे से मिल रहे थे । आपस में हँस-बोल रहे थे । एक-दूसरे से सामान खरीद रहे थे । मिलकर किसी रेहड़ी या खोखे पर खा-पी रहे थे । हर तरफ अमन-चैन था। कहीं कोई दुश्मनी नहीं । कोई वैर नहीं। दोपहर में न जाने क्या हुआ कि सारे शहर में दंगों के फैलने की अफवाह फैल गई । हवा के रुमकने के साथ फैलती चली गई। लोग दुकान-मकान छोड़-छोड़ कर भागने लगे । गलियों में सरपट भागे जा रहे थे । सामने से कोई आता दिखाई देता तो भागते हुए ही पूछते— 'भई हुआ क्या, जो इस तरह मार-काट मची है।'

'तुम्हे नहीं पता, अभी थोड़ी देर पहले गफूर और रहीम ने मोहन का कत्ल कर दिया बीच बाजार में । आराम से बातें कर रहे थे तीनों । अचानक रहीम ने मोहन की गरदन पकड़कर घुमा दी । सीधा गिरा पक्की सड़क पर । मिनट में लहूलुहान हो गया । सामने एक आर एम पी डाक्टर की दुकान थी । दो लोग दौड़कर उसे बुलाकर लाए । आते ही उसने नब्ज देखी और सिर हिलाकर चला गया । लड़के की साँस गायब हो गई थी । लोगों ने दोनों को पकड़ने की कोशिश की । रहीम भाग गया । गफूर लोगों के हाथ आ गया । भाई मेरे, लोगों ने पीट-पीट कर उसकी वह गत बना दी कि वह और उसकी कई पीढियाँ सात जन्म तक याद रखेंगी। अभी और न जाने कितना पीटते कि सामने से पंद्रह-बीस मुसलमान लड़कों की टोली हाथ में लाठियाँ लिए आ गई। वे सब गफूर को वहीं छोड़कर जिधर रास्ता मिला, उधर भागे।

किसी ने पुलिस को खबर कर दी थी । पुलिस की गाड़ियाँ हूटर बजाती हुई आईं। पुलिस वाले उतरे। बिना आगा-पीछा देखे लाठी बरसानी शुरु । कई तमाशबीन खड़े थे । लहूलुहान होकर छटपटाने लगे । किसी का सिर फूटा । किसी का कंधा।

ये तो बहुत बुरा हुआ । फिर...?

फिर क्या? भागो ।... और वह तेजी से भाग गया।

इस समय सड़कों पर दो तरह के लोग घूम रहे हैं । पहले वे, जिनके हाथों में कुल्हाड़े, दरांत, बरछे, डंडे जैसे हथियार हैं और वे सड़कों पर 'मारो-मारो, कोई बचने न पाए' चिल्लाते हुए भाग रहे हैं । कुछ लोगों के हाथों में जलती मशालें भी हैं जिनसे वे जहाँ-तहाँ दुकानों को, घरों को जला रहे हैं। बीच-बीच में खुद को सही साबित करने के लिए तीखी आवाज में कोई धार्मिक नारा लगा देते हैं । इनके पीछे-पीछे लोगों का हुजूम है जो जलती हुई दुकान या घर से कीमती सामान लूटकर जा रहा है। दूसरी तरह के लोग इनकी विपरीत दिशा में डरे-सहमे-घबराए, बेतहाशा भाग रहे हैं कि उनकी जान इन जुनूनी हब्शियों के हाथों से बच जाए। मैं जिंदा रहना चाहता हूँ । ईश्वर ने मुझे धरती पर भेजा है तो जिंदा रहना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है; पर, इस शहर में चारों ओर फैली नफरत की आँधी के इस दौर में धर्म और जाति की ऊँची-ऊँची दीवारें उगी हुई हैं। उन दीवारों के पार लाशों के अंबार लगे हैं। गंधाती हुई मस्तकविहीन लोथें यहाँ से वहाँ कठपुतली की तरह चल रही हैं। इनकी डोर चंद हाथों की उंगलियों में लिपटी है। जब तब वे उंगलियाँ हिलती हैं तो इन बेजान पुतलों में हरकत होने लगती है। मारकाट शुरु हो जाती है। मैंने अपने बचाव के लिए हाथों में पत्थर उठा लिया है। मुझे न हाथ दिख रहे हैं न उंगलियाँ। बस दुर्गंध में रची-बसी दीवारें दिख रही हैं। मैं साँस रोककर दीवार से सटा हुआ अपनी मौत की आहट सुनने की कोशिश कर रहा हूँ । मुट्ठियाँ कसे हुए हाथों में पत्थर कसमसा रहा है। हिम्मत पर दहशत हावी हो रही है। हथेलियाँ पसीना पसीना होने लगी हैं। बाजुओं ने उठने से इंकार कर दिया है । मेरी साँस तेज-तेज चलने लगी है । अभी तक मैं जिंदा हूँ, यह अहसास मेरी साँसों को चलाने के लिए काफी है और तमाम दुरभिसंधियों के बावजूद मुझमें कोई ईश्वर जिंदा है ।

लोकतंत्र के कंधे पर सवार राजतंत्र

स्नेह गोस्वामी

विक्रम ने घूमकर देखा । बेताल फिर से बरगद पर जा लटका था । वह लौटा और उसने फिर से शव को कंधों पर लाद लिया और चल पड़ा । शव धीरे-धीरे भारी होने लगा । शव में छिपे बेताल ने ठहाका लगाया— 'तुम बहुत हठी हो राजा । फिर से मुझे उठाकर लेजाने आ गये। चलो, तुम्हारी थकावट दूर करने के लिए एक कहानी सुनाता हूँ—

एक देश था । सोने का देश । हरे-भरे खेत-खलिहान । पुण्य सलिला सदानीरा नदियाँ । खनिज उगलती धरती । धर्मभीरु लोग । इन लोगों ने अपना राजा खुद चुना । बुद्धिजीवी विद्वान लोग खुश हो गये । अब धरती पर हमारा अपना राज्य है । हम अपना कानून बनाएँगे। राजा हमारे अधीन रहेगा । हमारी सारी बातें मानेगा । राजा ने अपना राज्य संभाला और नया मंत्रीमंडल बनाया। लोगों ने राजा का जय-जय कार किया । राज ने दंड अपने हाथ में पकड़ा और सिंहासन पर आरूढ़ हो गया । लोग राजा और राज-सिंहासन के सामने झुक गये । राजा ने सारा शासन कार्य अपने हाथ में ले लिया और अपने चापलूस मंत्रियों की सहायता से राज चलाने लगा । उसने कुछ बुद्धिजीवियों को विभिन्न पदों पर नियुक्त कर उनके

लिए सुविधाएँ जुटा दीं । ये बुद्धिजीवी उन सुविधाओं की दीवारों से घिर गये और राजा उनकी नजरों से परे होकर अपनी मनमानी करने लगा । कुछ ही सालों में राजा सर्वशक्ति सम्पन्न होकर धनी हो गया और धीरे-धीरे उसकी प्रजा गरीब होते-होते भूखों मरने लगी। लोग उस राजा के अत्याचारों से आतंकित और घबराए रहने लगे ।

इतनी कथा सुनाकर बेताल ने राजा से पूछा— "बताओ राजन, लोगों ने राजा को खुद चुना। फिर भी वे गरीब क्यों हो गये और राजा ताकतवर कैसे हो गया ।"

विक्रमादित्य हँसा—"बेताल, तुम्हारे इन प्रश्नों के उत्तर तो तुम्हारे प्रश्नों में ही हैं । लोग सिंहासन से डरने के आदी थे। इसलिए, जब उनके द्वारा चुना गया राजा भी उसी सिंहासन पर बैठा तो लोग डरकर उसकी जय -जयकार करने लगे। राजा चापलूस मंत्रियों से घिरा था और बुद्धिजीवी अपनी सुविधाओं में कैद थे तो प्रजा के दुख-तकलीफ किसे दिखाई देते। उनका शोषण पदों पर बैठे लोग करते रहे। प्रजातंत्र की आड़ में राजतंत्र अपनी जड़ें जमाकर बैठा रहा ।"

बेताल ने सिर हिलाया – "बिल्कुल ठीक राजन, तुमने एक बार फिर से सिद्ध कर दिया कि तुम बहुत बुद्धिमान हो पर तुम बोले और मैं चला!"

और बेताल दोबारा उस पेड़ की ओर उड़ चला ।

एक नदी थी

स्नेह गोस्वामी

पहाड़ से उतरकर उछली-फुदकती चंचल धारा ने छलांग लगाई तो हैरान रह गई। सामने हरा-भरा मैदान बिखरा था। हजारों घर बने थे । कच्चे घर, पक्के घर । छोटे-छोटे घर बड़े-बड़े घर। घरों के पास सर्पीली सड़कें। वह मंत्रमुग्ध हुई आगे बढ़ती रही । यह क्या! इस बड़े-से घर से यह काला-काला धुआँ!! उसे अपनी साँस घुटती हुई लगी। वह अपनी चाल तेज कर वहाँ से भाग जाना चाहती कि अचानक एक बदबू मारता काला पानी उसकी उजली धारा में आ मिला । अरे रे-रे , तुम कहाँ चले आ रहे हो। देखो, तुमने मुझे भी गंदा कर दिया। मैं क्या करूँ दीदी। कभी मैं भी तुम जैसा उजला हुआ करता था । इस आदमी नाम के प्राणी ने अपने कारखाने का गंदा पानी मुझमें मिलाकर मुझे काला कर दिया। मैंने तो सोचा कि तुम्हारे उजले पानी में मिलकर मैं पहले जैसा हो जाऊँगा । नदी कोई जवाब देती इससे पहले ही दसियों गंदे नाले और सीवर का पानी उसके जल में समा गया। नदी को आया गुस्सा। वह अपने तट तोड़कर चल पड़ी शहरों और गाँवों की ओर। उसका पानी कारखानों में घुस गया । घरों, खेतों, खलिहानों में जा घुसा । हर तरफ प्रलय ही प्रलय । आदमी बेबस होकर ईश्वर को पुकार रहा था । नदी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी ।